POLITICAL SCIENCE Dep.
BA-2 (Sub.)

Dr. HUSNA ARA
Asst Professor
Dr. L.K.V.D. College,
Tajpur, Samastipur

राजनीतिक व्यवस्था के लक्षण

आमण्ड और पावेल ने राजनीतिक व्यवस्था के लक्षण इस प्रकार बताए हैं—

① भागों की अंतर्निर्भरता।
② राजनीतिक व्यवस्था की सीमा।
③ राजनीतिक व्यवस्था का पर्यावरण।
④ वैध बाध्यकारी शक्ति।

सामान्य तौर पर राजनीतिक व्यवस्था के लक्षण का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

① अंगों की पारस्परिक निर्भरता—

राजनीतिक व्यवस्था में अंगों की पारस्परिक निर्भरता पाई जाती है। जब किसी व्यवस्था के किसी अंग में किसी भी प्रकार का परिवर्तन होता है तो इसका प्रभाव सम्पूर्ण व्यवस्था पर पड़ता है।

② सीमा का विचार—

प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था की कुछ सीमाएं निर्धारित होती हैं जिनके आधार पर किसी देश की व्यवस्था को लोकतांत्रिक या एकाधिकारवादी कहा जाता है। इसकी सीमाएं कभी

Scanned with CamScanner

बढ़ जाती है तो कभी सिकुड़ जाती है। जैसे चुनावों के समय राजनीतिक व्यवस्था की सीमा बढ़ जाती है क्योंकि मतदाता चुनाव के दिन राजनीतिज्ञ बन जाता है और विभिन्न प्रकार के राजनीतिक मत देने का प्रयास करता है। पुनः सामान्य स्थिति आने पर इसकी सीमा सिकुड़ती है।

③ राजनीतिक प्रभाव की खोज —

हितों की प्राप्ति हेतु राजनीतिक व्यवस्था में व्यक्ति राजनीतिक प्रभाव बढ़ाना चाहता है ताकि सरकारी तंत्र पर नियंत्रण कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

④ राजनीतिक प्रभाव का असमान वितरण —

राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक प्रभाव का असमान वितरण प्राचीन काल से चला आ रहा है। जो लोग राजनीतिक व्यवस्था में अधिक प्रभावशाली होते हैं उन्हें नेताओं की श्रेणी में रखा जाता है।

⑤ औचित्यपूर्णता की प्राप्ति —

राजनीतिक व्यवस्था में यह ध्यान रखा जाता है कि सरकारी व्यवस्था की मान्यता का आधार औचित्यपूर्ण होना चाहिए।

⑥ विचारधारा का विकास —

राजनीतिक व्यवस्था में नेता अपने नेतृत्व का औचित्य सिद्ध करने के लिए प्रायः एक विचारधारा अपना लेते हैं।

Dr. Huma Ara

Scanned with CamScanner